Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

त्यागपत्र उपन्यास की शिल्पगत समीक्षा

सतीश कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ए0पी0एस0 विश्वविद्यालय रीवा, म0प्र0

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 12-15
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 11 Sep 2023

शोधसारांश – उपन्यास कला की दृष्टि से त्यागपत्र जैनेन्द्र कुमार का एक सशक्त प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है वस्तुतः त्यागपत्र अपने जीवन–दर्शन के कारण हिंदी साहित्य मे नवीन कीर्तिमान स्थापित करने मे समर्थ रहा है समीक्षकों की दृष्टि मे यह उपन्यास हिंदी साहित्य को नवीन विचारधारा की ओर उन्मुख कराता है ।

मुख्यशब्द– त्यागपत्र, उपन्यास, शिल्पगत, कला, जैनेन्द्र कुमार।

जैनेन्द्र कृत 'त्यागपत्र' उपन्यास हिंदी के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की कोटि मे एक प्रकाश–स्तंभ है । क्योंकि सन् 1937 ई0 में प्रकाशित हुए इस उपन्यास ने उस काल मे विशेष प्रसिद्धि प्राप्त मुंशी प्रेमचंद्र के सामाजिक उपन्यासों के प्रवाह को नूतन मोड दिया था। हालांकि जैनेन्द्र ने समाज के स्थान पर व्यक्ति को या कहिए समष्टि के स्थान पर त्यष्टि को महत्व प्रदान किया इस व्यक्ति में से भी जैनेन्द्र का झुकाव नारियों की ओर रहा है और उनके प्रायः सभी उपन्यास नारी प्रधान ही है। इन नारियों को भी उन्होने ऐसी पृष्ठभूमि मे प्रस्तुत किया है उसके जीवन मे ऐसे उतार–चढ़ाव किए है कि इन नारियों के चरित्र एक अबूझ पहेली जैसे बन गए है।

त्यागपत्र उपन्यास की कथावस्तु और उसका विकास पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक) शैली के माध्यम से किया गया है इसका प्रमुख पात्र प्रमोद या जज एम. दयाल अपने पद से इस्तीफा देते हुए उन कारणों का पुनरावलोकन करता है जिसके कारण उसे अपनी बुआ के नारकीय जीवन पर पश्चाताप होता है और वह तदर्थ स्वयं को भी अपराधी सा मानते हुए अपने पद से त्यागपत्र दे देता है। कथा का विकास प्रमोद इवारा अपने जीवन की घटनाओं के पुनरावलोकन के माध्यम से कराया गया है चूंकि प्रमोद और मृणाल का बाल्यकाल परस्पर संबंधित रहा था तथा बाद मे वह जब तब मृणाल से मिलता रहता था अतः मृणाल के जीवन पर भी इन मुलाकातों मे शांत हुई बातों को प्रकाश मे डाला गया है।

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास मे सामान्यतः पात्रो की संख्या कम ही होनी चाहिए क्योंकि तभी उपन्यासकार उनका चरित्र चित्रण करने का अधिक अवसर प्राप्त कर पाता है इस दृष्टि से जैनेन्द्र ने

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

'त्यागपत्र' उपन्यास मे मात्र दो ही पात्रो को प्रमुखता देकर उचित कदम उठाया इन दोनों पात्रो–मृणाल और प्रमोद मे से भी उपन्यासकार ने प्रमोद का विस्तृत चित्रांकन नही किया है – वह भी मूलतः मृणाल के चरित्र के विभिन्न पक्षों के उद्घाटन का माध्यम मात्र है अतः समीक्षा की दृष्टि से कहा जा सकता है कि यह उपन्यास नायिका प्रधान है। हाँ मृणाल का चित्रोकन उपन्यासकार ने इस रूप में किया है कि सहज रूप मे पाठको के गले नही उतर पाता है उदाहरण के लिए सामान्य नारी कदाचित यह कदम नही उठाती कि वह अपने पति को अपने विगत काल के प्रेम संबध के बारे में बताए उसके इस आचरण को तो उसके भोलेपन और सत्य–प्रेम का प्रतीक स्वीकार किया जा सकता है किंतु मृणाल द्वारा कोयले वाले के साथ रहना और यह जानते हुए भी कि यह व्यक्ति मुझको छोड़कर चला जाएगा उसको सर्वस्य समर्पित करते रहना समुचित प्रतीत नही होता। इसी प्रकार उसका वेश्याओ, चोरों जेबकतरों आदि की बस्ती में रहना और इस तथ्य पर बल देना कि सच्ची मनुष्यता यहाँ ही है–यहाँ सभ्य जगत् जैसा मिथ्याडंबर नही है– आंत्यतिक रूप में ठीक होते हुए भी कोई अनुकरणीय प्रेरणा प्रदान नही कर पाता। यहाँ पर पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी का कथन उचित प्रतीत होता है कि– ''जैनेन्द्र की मृणाल पहेली बन गई है क्योंकि उन्होने उसके अंतर्गत के भाव सौन्दर्य को परिस्फुट नही किया। प्रेम की वह क्या गरिमा थी, जिससे उसने कलंक, निंदा और दुःख–तीनो को चुपचाप सहन कर लिया है''।

वहीं इस उपन्यास में बाह्य वातावरण की अपेक्षा आंतरिक वातावरण की नियोजना पर अधिक बल दिया गया है। आंतरिक वातावरण आज के देश काल के अनुसार या युगानुरूप है। आज व्यक्तिवादी समाज है और आज समाज की ईकाई का महत्व ही सर्वोपरि है अतः व्यक्ति की अपनी विचार–परिधि की आज के संदर्भ मे इतनी विवृंत श्रृंखला है कि नाना विकार अनजाने ही झाँक उठते है। उदाहरण के तौर पर–मन मे एक गाँठ–सी पड़ती पाती थी। वह न खुलती है न धुलती थी बल्कि कुछ करो तो वह उलझती और कसती ही जाती थी जो कुछ होता था, जो कुछ होना चाहिए था कुछ करना चाहिए कही कुछ गड़बड़ है। कहीं क्यों सब गड़बड़–ही–गड़बड़ है। सृष्टि गलत है, समाज गलत है जीवन ही हमारा गलत है सारा चक्कर यह ऊंटपटांग है।

इसमें तर्क नही, संगति नही, कुछ नही है।

सैक्स प्रेम और साहचर्य आधुनिक युगों मे खूब पनप रहा है फिर यह कैसे संभव है कि स्वतंत्रयोत्तर काल के उपन्यासकारो ने इसका स्पर्श न किया हो? इसके संदर्भ मे जैनेन्द्र जी लिखते हैं कि– ''समग्र मे अहं चेतनाओं के पृथक होते ही उनमे पर के सानिध्य की चाह उत्पन्न हुई। इसी चाह के दो रूप हो गए। एक ने चाहा 'वह मुझमें' हो। वह अहम् स्त्रीत्व प्रधान हो गया। दूसरे ने चाहा 'मैं' उसमे हूँ। यह अहम् पुरूष–युक्त हुआ। इस प्रकार एक ही अहम् के दो रूप या अर्द्धनारीश्वर की पौराणिक कल्पना को लेकर वे चले है। अतः आलोचकों व समीक्षकों की दृष्टि मे त्यागपत्र उपन्यास कि देशकाल और वातावरण योजना की दृष्टि मे सफल रहा है।

कथोपकथन की दृष्टि से इस उपन्यास मे पात्रों का चरित्र उद्घाटन, कथा का विकास, कथानक की विलुप्त कड़ियों को जोड़ना सामान्य बोलचाल इत्यादि का प्रथम दृष्टि मे कथाकार ने स्वीकारा है।

अतः समीक्षा की दृष्टि मे संवाद योजना की रीति सफल रही है।

भाषा– शैली की दृष्टि से त्यागपत्र उपन्यास मे कहीं–कहीं अतीव सरल तथा कहीं अत्यधिक सांकेतिक और गूढ़ भाषा–शैली का प्रयोग किया गया है शब्दावली की दृष्टि से उन्होंने भावाभिव्यक्ति मे सहायक तत्सम्, तद्भव, देशज और विदेशी सभी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया है style is the men himself उक्ति जैनेन्द्र की भाषा–शैली पर पूर्णतया चरितार्थ होती है क्योंकि उनके प्रायः सभी उपन्यासों और कहानियों मे एक ऐसी विशिष्ट प्रकार की भाषा– शैली का प्रयोग किया गया है कि उसे पढ़कर तुरंत इस बात का ज्ञान हो जाता है कि यह जैनेन्द्र की रचना है कुछ उदाहरण अवलोकनीय है–

क– तू अब उसे कभी याद मत 'करियो'।

ख– हम लोगों का असली घर 'पछांह' की ओर था।

ग– 'नाहक' किसी को क्यों तकलीफ दोगी

घ– शीला ऐसी हो गयी जैसे ऊद–बिलाव के आगे मुसी। (उपमा अलंकार युक्त भाषा)

ड़– कहीं–कहीं अग्रेंजी भाषा का भी प्रयोग कर लिया करते थे जैसे– I Have you what more do I want ?

अतः जैनेन्द्र भाषा के संबंध मे कहा जा सकता है कि आत्मीयता विश्वनीयता का समन्वय युक्त भावों का समाहार संक्षिप्तता और अपनत्व की प्रभविष्णुता वहां विशेष रूप से विद्यमान है। भाषा दार्शनिकता के कारण सजीव होते हुये भी लाक्षणिक व्यंजना से कुछ बोझिल अवश्य है। अतः समीक्षा की दृष्टि से कहें तो भाषा–शैली–सरल–सजीव होते हुए भी यंत्र–तंत्र दुरूहता लिए हुए है।

समीक्षा की दृष्टि मे उपन्यास की वर्ण्य–वस्तु और उसकी परिणति कुछ ऐसी उलझनमयी है कि स्पष्ट रूप से कुछ कही नही जा सकता कि रचनाकार का उद्देश्य क्या है?

इसके अतिरिक्त 'त्यागपत्र' मे जैनेन्द्र नियतिवादी भी यदि परिलक्षित होते है यही कारण है कि वे भाग्य मे विश्वास करते है बहुत कुछ जो इस दुनिया मे हो रहा है वह वैसा क्यों होता है अन्यथा क्यों नही होता – इसका क्या उत्तर है? उत्तर हो अथवा न हो पर जान पड़ता है भवितव्य ही होता है। नियति का लेख बंधा है। एक भी अक्षर उसका यहाँ से वहाँ न हो सकेगा। वह बदलता नही बदलेगा नही। पर विधि का वह अतर्क्य तर्क किस विधाता ने बनाया है उसका उसमे क्या प्रयोजन है यह भी कभी पूछकर जानने की इच्छा की जा सकती है या नही?

निष्कर्षतः उपन्यास कला की दृष्टि से त्यागपत्र जैनेन्द्र कुमार का एक सशक्त प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है वस्तुतः त्यागपत्र अपने जीवन–दर्शन के कारण हिंदी साहित्य मे नवीन कीर्तिमान स्थापित करने मे समर्थ रहा है समीक्षकों की दृष्टि मे यह उपन्यास हिंदी साहित्य को नवीन विचारधारा की ओर उन्मुख कराता है ।

संदर्भ सूची–

1 त्यागपत्र 'उपन्यास' एक विवेचन– डॉ कृष्णदेव शर्मा
2 त्यागपत्र मे चित्रित स्त्री जीवन की समस्याएं लेख– कमलेश
3 जैनेन्द्र की रचनात्मक दुनिया मे स्त्री– प्रीति चौधरी
4 हिंदीकुंज
5 हिंदी उपन्यासों मे चित्रित स़्त्री विमर्श– जितेन्द्र कुमार